अध्याय : 5

उपसंहार

अध्याय : 5

उपसंहार

5.1 लघु शोध प्रबंध का सारतत्व :-

साहित्य और समाज का चोली-दामन का संबंध है। हिन्दी साहित्य के इतिहास का अध्ययन करने पर यह बात स्पष्ट होती है। आदिकाल के पूर्वार्ध में धर्म की प्रबलता थी। हिन्दी भाषी प्रदेशों में तीन वर्गों की धूम थी - बौध्दसिध्द, नाथयोगी तथा जैन-मुनी। परिणामतः तत्कालीन हिन्दी-काव्य में उन्ही वर्गों की गूँज सुनाई पडती है। हिन्दी साहित्य के इस उद्‌भव काल में राजनीतिक दृष्टि से बहुत उथल-पुथल रही। छोटे छोटे सामन्त आपस में युध्द किया करते थे। युध्द का कारण शासकों का मिथ्याभिमान, दूसरे सामन्त की सुन्दरी कन्या का अपहरण होता था। इसकी झलक तत्कालीन वीरगाथाओं में मिलती है।

भक्तिकाल के समाज के दर्शन तत्कालीन काव्य में मिलते हैं। भक्ति की धारा प्रबल थी इसलिए धर्माश्रय में ज्यादातर काव्य लिखा गया। दूसरी ओर तत्कालीन यवन शक्ति के दबाव के भी दर्शन होते हैं। मानस में स्थान-स्थान पर मिलनेवाला राक्षसों का वर्णन, राक्षसी प्रवृत्तिवाले यवन शासकों का वर्णन है।

रीतिकाल का काव्य राजाश्रय का आधार लेकर निर्माण हुआ। अतः राजदरबार की विलास प्रियता तथा वैभव प्रदर्शन तत्कालीन काव्य में मिलते हैं। इस काल का साहित्य बहुगामिता, विलास प्रियता, वैभवप्रियता का पोषक साहित्य है।

भारतेन्दु युग में अन्तर्राष्ट्रीय जन-जागृति अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा तथा पारतंत्र्य के कारण स्फूरित चेतना से बना परिवेश था। समाज सुधार तथा देशप्रेम इस युग का मूलाधार थे। इसलिए तत्कालीन साहित्य में इसके ही दर्शन होते हैं।

द्विवेदी युग में भी अंग्रेजी शासन के परिणामस्वरूप देशप्रेम की भावना बलवती हो गई थी। परिणामतः समाजसुधार तथा देशप्रेम इस काल के साहित्य में प्रमुख रूप से पाये जाते हैं।

छायावादी युग की रूढ़ियाँ तथा नैतिकता की प्रतिक्रिया से व्यक्तिवादी स्वर उभर उठा। ये व्यक्ति पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित थे। इसलिए रूढ़ियों को नष्ट करना तथा समाज का नवनिर्माण इनके काव्य का उद्देश्य रहा। सामाजिक विषमता से इस कविता में निराशा भी आयी। आधुनिक जीवन के आत्मकेन्द्रित मनुष्य की विडंबना का चित्रण भी इसमें मिलता है।

छायावादोत्तर युग में द्वितीय महायुध्द से उत्पन्न आर्थिक समस्याओं से त्रस्त समाज के दर्शन होते हैं। आर्थिक अभाव से उत्पन्न निराशा इसमें मिलती है। साथ ही भारतीय पराधीनता से उत्पन्न यातना भी छायावादोत्तर काव्य में मिलती है। भारतीय चेतना को प्रेरणा देने की कोशिश भी यहाँ है।

प्रगतिवादी काव्य अन्तर्राष्ट्रीय विचारों से प्रेरित है। देश में मार्क्सवाद का प्रभाव पडा और साहित्य में भी। प्रयोगवादी युग में पाश्चात्य सभ्यता के दर्शन होते हैं। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से मूल्यहीनता बढ गयी है। इसका चित्रण प्रयोगवाद के कुछ कवियों ने किया है। इस तरह समाज के परिवर्तन के साथ साथ साहित्य की प्रवृत्तियाँ भी बदलती गयी।

आधुनिक काल में हिन्दी ग़ज़ल का विकास खूब हो रहा है। मूलतः यह उर्दू-फारसी से आयातित विधा है। हिन्दी कवियोंने इसे प्रयासपूर्वक अपनाया है।

हिन्दी ग़ज़ल के उद्‌भव के तीन कारण बताये जा सकते हैं ।

1. उर्दू ग़ज़लों की लोकप्रियता
2. हिन्दी में इतिवृत्तात्मक कविता, गीत, प्रगीत, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद की प्रतिक्रिया
3. ग़ज़ल की संक्षिप्तता एवं अनुभूति की तीव्रता

हिन्दी ग़ज़ल का स्वरूप उर्दू ग़ज़ल से भिन्न है। हिन्दी ग़ज़ल केवल शिल्प की दृष्टि से उर्दू ग़ज़ल से साम्य रखती है। कथ्य की दृष्टि से हिन्दी ग़ज़ले फारसी उर्दू की ग़ज़लों से अलग ढंग की है। हिन्दी ग़ज़ल भारतीयता के रंग में रंगी हुई है। इसलिए उसका अपना अलग अस्तित्व है। हिन्दी की ग़ज़ले इश्क-मुहब्बत के जाल को तोडकर सामान्य मनुष्य की जिन्दगी के सुख दुःखों से जुड़ गयी है। भ्रष्ट राजनीतिका पर्दाफाश तथा सभी तरह की विसंगतियों पर प्रहार हिन्दी ग़ज़ल की विशेषता है।

हिन्दी ग़ज़ल ने भाषा की दृष्टि से भी अपनी अलग पहचान बनायी है। तत्सम शब्दावली से युक्त तथा बोलचाल की भाषा को हिन्दी ग़ज़ल ने अपनाया है। नये नये उपमानों से अपनी संस्कृति का इजहार हिन्दी ग़ज़ल ने किया है। शमा-परवाना से दामन छुडाकर समाज और समाज में रहनेवाले आम आदमी से अपना रिश्ता जोडकर हिन्दी ग़ज़ल ने अपनी विकास यात्रा जारी रखी है।

हिन्दी ग़ज़लों में समाज तथा उसके यथार्थ को मार्मिकता के साथ पेश किया गया है। आजादी के बाद देश तथा समाज की जो स्थिति है उसे हिन्दी ग़ज़लकारों ने बारीकी के साथ चित्रित किया है। आजादी के बाद की मोहभंग की स्थिति, सामाजिक विषमता, गरीबी, बेरोजगारी, महँगाई, भ्रष्टाचार, बेईमानी, धर्म के नामपर दंगे, नारी की स्थिति, उस पर होनेवाले अत्याचार, सर्वहारा वर्ग का शोषण, पूंजीवाद, आम आदमी की पीडा एवं उसकी समस्याएँ आदि कई समस्याओं का चित्रण हिन्दी ग़ज़लों में मिलता है। दुष्यन्तकुमार, जहीर कुरेशी, चन्द्रसेन विराट, रामकुमार कृषक, डॉ॰कुँअर बेचैन ने अपनी अपनी ग़ज़लों में सामाजिक परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने समाज को बदलने की प्रेरणा भी दी है।

हिन्दी ग़ज़ल का राजनीतिक सन्दर्भ भी मिलता है। हमारे देश का राजनीतिक यथार्थ हिन्दी ग़ज़लकारों ने चित्रित किया है। आज राजनीति मनुष्य के जीवन का एक अंग रही है। 1977 के बाद का राजनीति का रूप अत्यंत घिनौना है। "देशसेवा"

के नामपर "मेवा" खानेवाले नेता आज की राजनीति की विशेषता है। देश का शोषण हो रहा है। अवसरवादी नेता की नीति का पर्दाफाश हिन्दी ग़ज़लकारो ने किया है ।

स्वार्थ केंन्द्रित राजनीति से उत्पन्न समस्याएँ, "धर्म" का स्वार्थ के लिए उपयोग इसका चित्रण हिन्दी ग़ज़ल में मिलता है। "वोट" की राजनीति के लिए ज्वलंत प्रश्नों को निर्माण किया जाता है। आज की राजनीति गुंडागर्दी के निकट है। गरीबी और भूख का सवाल ज्यों का त्यों है। राजनीति के नामपर नेताओं ने देश का, समाज का, मनुष्य का शोषण किया है। नेताओं ने देश की हालत खराब को है। जनतंत्र खतरे में आ गया है। यही सब यथार्थ हिंदी ग़ज़लकारों ने जनता के सामने रखा है। दुष्यन्तकुमार, रामकुमार कृषक, डॉ·कुँअर बेचैन, जहीर कुरेशी आदि ने व्यंग्य के साथ राजनीति के जुल्मों का पर्दाफाश किया है।

हिन्दी ग़ज़लकारों ने न केवल यथार्थ राजनीति का चित्रण किया है बल्कि राजनीति के जुल्मों से टकराने की प्रेरणा भी दी है। डॉ·कुँअर बेचैन, दुष्यन्तकुमार इनकी ग़ज़लों में विद्रोह के स्वर मिलते हैं । हिन्दी ग़ज़लकारों ने इंकलाब लाने की कोशिश की है। आपातकालमें राजनीति अपने आदर्शों से हट रही थी। ऐसे समय दुष्यन्तकुमार ने अपनी ग़ज़लों से सरकार की आँख खोलने की कोशिश की है। हिन्दी ग़ज़लों ने सरकार एवं जनता के सामने राजनीतिक यथार्थ रख कर सजग करने की कोशिश की है। संक्षेप में हिन्दी ग़ज़ल में राजनीति बोध का बखूबी चित्रण हुआ है।

5.2 लघु शोध प्रबन्ध की उपलब्धियाँ :-

हिन्दी ग़ज़ल (सामाजिक तथा राजनीतिक संदर्भ में) इस विषय को लेकर शोध कार्य करते हुए मैंने निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले हैं -

1· कविता तथा समाज का परस्पर संबंध है, दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

2· हिन्दी ग़ज़ल उर्दू-फारसी से आयातित विधा है और हिन्दी में एक लोकप्रिय

विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी हैं।

3. हिन्दी ग़ज़लों का उद्भव, उर्दू ग़ज़लों की लोकप्रियता एवं ग़ज़ल की संक्षिप्तता और अनुभूति की तीव्रता से हुआ है।

4. हिन्दी ग़ज़ल शिल्प की दृष्टि से उर्दू ग़ज़ल से साम्य रखती है लेकिन कथ्य की दृष्टि से अलग है।

5. हिन्दी ग़ज़ल की आत्मा भारतीय है ।

6. विसंगतियों पर प्रहार करना हिन्दी ग़ज़ल की अपनी महत्वपूर्ण विशेषता रही है।

7. हिन्दी ग़ज़ल ने तत्सम शब्दावली से युक्त तथा बोलचाल की भाषा को अपनाया है।

8. हिन्दी ग़ज़ल ने नये उपमानों को अपनाया है।

9. हिन्दी की ग़ज़लें सामाजिकता से युक्त है।

10. हिन्दी की ग़ज़लें राजनीतिक यथार्थ को बखूबी प्रकट करती है।

11. हिन्दी की ग़ज़लें समाज को बदलने की प्रेरणा देती हैं।

12. हिन्दी की ग़ज़लें इंकलाब की प्रेरणा देती है। -क